International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

छत्तीसगढ़ में बलौदाबाजार जिले के कृषक परिवारों की आय समूहों में व्याप्त गरीबी का अध्ययन

डॉ. ओमप्रकाश बघेल* रश्मि जोगी**

सारांश

भारत एक विकासशील देश होने के साथ–साथ कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है जहां देश की अधिकांश आबादी ग्रामों में निवास करती है जिसके जीवकोपार्जन का मुख्य व्यवसाय कृषि है,परन्तु वर्तमान समय में लोग जैसे–जैसे शिक्षित होते जा रहे हैं कृषि कार्य करना पसंद नही करते जबकि सभी शिक्षित लोगों कों रोजगार देना सरकार के लिए सम्भव नही है साथ ही यहां लोग कृषि कार्य के लिए पुरानी तकनीकों एवं पुराने बीज का प्रयोग करते हैं जिससे उत्पादन एवं उत्पादकता में कमी होती है जिसके कारण कृषक परिवारों में बेरोजगारी एवं गरीबी व्याप्त होती है इसलिए सरकार को चाहिए की युवा पीढ़ी को आधुनिक कृषि यंत्रों एवं प्रसंस्करणों का प्रशिक्षण देकर उनका ध्यान कृषि कार्य की ओर आकर्षित और कृषि से स्वयं की व्यवसाय स्थापित करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें साथ ही उन्हें कृषि उत्पाद का उचित मूल्य, कम ब्याज पर ऋण, सिंचाई के साधनों की व्यवस्था एवं कम दर में प्रमाणित बीज की सुविधा उपलब्ध कराना चाहिए।

शब्द कुंजी –उत्पादन एवं उत्पादकता, बेरोजगारी एवं गरीबी।

प्रस्तावना

भारत की लगभग 68.84 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि है, लेकिन कृषि की दशा अत्यन्त गिरी हुई है। भारत में प्रति वर्ष बाढ़, सूखा आदि से करोड़ों रूपये की फसल नष्ट हो जाती है साथ ही सही समय में पानी उपलब्ध न होने के कारण भूमि की सिंचाई नहीं हो पाती तथा आधुनिक ढ़ंग की जुताई की व्यवस्था नहीं हो पाती। भारत का बहुसंख्यक किसान इतनी पैदावार नहीं कर पाता कि उसकी न्यूनतम आवश्यकताएं पूरी हो सकें उसे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये तथा खेती करने के लिए ऋण लेना पड़ता है जिसके कारण वह निर्धन हो जाते हैं। इसे ही ग्रामीण निर्धनता कहते हैं। दूसरे, ग्राम की निर्धनता में खेतिहर मजदूर, भूमिहीन किसान भी सम्मिलित हैं। तीसरे, भूमि पर जनसंख्या का दबाव भी अधिक इसलिए भी ग्रामीण निर्धनता में वृद्धि हो रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षा, सामाजिक कुप्रथाओं, यातायात के साधनों की कमी, संयुक्त परिवार प्रणाली आदि के कारण भी निर्धनता है। छत्तीसगढ़ राज्य में भी लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है जिसके जीवकोपार्जन का मुख्य व्यवसाय

*सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, शासकीय बाला साहेब देशपाण्डे महाविद्यालय कुनकुरी, जशपुर (छ.ग.)

**शोधार्थी, अर्थशास्त्र अध्ययन शाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कृषि है। छत्तीसगढ़ में कृषि जोत के आकार की दृष्टि से अधिकाशतः सीमांत एवं लघु कृषक है जो कि कुल कृषक का लगभग 77 प्रतिशत है, जिसमें 55 प्रतिशत सीमांत कृषक एवं 22 प्रतिशत लघु कृषक एवं 23 प्रतिशत अन्य कृषक है और यहां कुल कृषि भूमि में लगभग 65 प्रतिशत क्षेत्र में धान की पैदावार की जाती है इसलिए छत्तीसगढ़ राज्य को '' धान का कटोरा'' भी कहा जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. निदर्श परिवारों को विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त आय का अध्ययन करना।
2. निदर्श परिवारों का आय समूह के आधार पर गरीबी का अध्ययन करना।
3. निदर्श परिवारों के गरीबी के कारणों का अध्ययन कर प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधियाँ – शोधकार्य प्राथमिक एवं द्वितीयक संमकों के संग्रहण पर आधारित है। प्राथमिक समंकों के संकलन के लिए बहुस्तरीय दैव निदर्शन प्ररचना का उपयोग किया गया है निदर्शन का चयन इस प्रकार किया गया है कि सभी परिवारों को चयन का समान अवसर प्राप्त हो। निदर्श ईकाई के पहले स्तर पर जिले को चयनित किया गया है। अध्ययन कार्य के लिए बलौदा बाजार जिले का चयन किया गया है।

विकासखण्ड का चयन– निदर्श ईकाई के दूसरे स्तर के लिए विकासखंड का चयन किया गया है। बलौदाबाजार जिले में छः विकासखंड है जिनमें बलौदाबाजार, भाटापारा, बिलाईगढ़, कसडोल, पलारी और सिमगा है। शोधकार्य कार्य के लिए सभी छः विकासंखडों का चयन किया गया है। बलौदाबाजार जिले की अपनी एक विशेषता है जो कि मुख्यतः विकासखंड के निकटस्थ क्षेत्रों में सीमेंट उद्योग, चावल उद्योग एवं कृषि क्षेत्र अधिक उन्नत है और विकासखण्ड के दूरस्थ क्षेत्रों में न तो उद्योग क्षेत्र है और न ही कृषि उत्पादकता उन्नत है इसलिए बलौदाबाजार जिले के निकटस्थ एवं दूरस्थ ग्रामों में गरीबी की स्थिति को जानने के लिए छः विकासखंडो का चयन किया गया है।

निदर्श का आकार – परिवारों में निदर्श के आकारों का चयन कोहरण समीकरण के द्वारा किया गया है। इस समीकरण के आधार पर कुल 384 निदर्श परिवारों का चयन किया गया है।

कोहरण समीकरण का फॉर्मूला इस प्रकार है–

$$n_0 = \frac{Z^2 pq}{e^2}$$

here n_0 is the sample size

Z is the abscissa of the normal curve that cuts off an area of at the tails

(1-α) eauals the desired confidence level of is 95%.

e is the desired level of precision

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

P is he estimated profportionof an attribute that is present in the population and q is 1-p. the value for Z is found in statistical table which contain the area under the normal crurve e.g. z = 1.96 for 95% level of confidence.

ग्रामों का चयन – कोहरण समीकरण के आधार पर प्रतिशत विधि के द्वारा कुल निदर्श परिवारों का आकार 384 है। शोधकार्य के लिए 12 ग्रामों का चयन किया गया है। शोध अध्ययन तुलनात्मक रूप से निकटस्थ ग्राम के अंतर्गत 6 ग्रामों का चयन किया गया तथा निकटस्थ ग्रामों में निदर्श का कुल आकार 272 परिवार है। दूसरी ओर दूरस्थ ग्रामों के अंतर्गत भी 6 ग्रामों का चयन चयन किया गया तथा दूरस्थ ग्रामों में निदर्श का कुल आकार 112 परिवार है। इस प्रकार निदर्श परिवारों का कुल आकार 384 परिवार है।

आंकड़ों का विश्लेषण– संकलित प्राथमिक समंकों का विश्लेषण में प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है।

4. अध्ययन का विश्लेषण –

1. निदर्श परिवारों के आय प्राप्ति का विश्लेषण –

सारणी क्रमांक 1.1

निदर्श परिवारों में विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त कुल मासिक आय (रू.में)

विवरण	जिला		
	निकटस्थ ग्राम	दूरस्थ ग्राम	कुल
स्वयं की कृषि से प्राप्त आय	895242.56 (28.8)	196198.24 (20.5)	1091440.8 (26.8)
कृषि मजदूरी से प्राप्त आय	482791.84 (15.5)	182990.08 (19.1)	665781.92 (16.4)
गैर कृषि से प्राप्त आय	1227323.84 (39.5)	435517.60 (45.4)	1662841.44 (40.9)
व्यवसाय से प्राप्त आय	504614.40 (16.2)	143732.96 (15.0)	648347.36 (15.9)
कुल	3109972.64 (100)	958438.88 (100)	4068411.52 (100)
प्रति परिवार आय	11433.72	8557.49	10594.82
प्रति व्यक्ति आय	1937.68	1426.25	1786.74

स्त्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण। नोट :– कोष्टक में दिए गए आकड़ें प्रतिशत को प्रदर्शित करते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी क्रमांक 1.1 में निदर्श परिवारों में विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त कुल मासिक आय (रू.में) के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि निदर्श कुल 384 परिवारों को विभिन्न स्त्रोतों से कुल 4068411.52 रूपये मासिक आय प्राप्त होती है जिसमें निकटस्थ ग्रामों को कुल 3109972.64 रूपये मासिक एवं दूरस्थ ग्रामों को कुल 958438.88 रूपये मासिक आय की प्राप्ति होती है। निकटस्थ ग्रामों में स्वयं की कृषि से प्राप्त आय 895242.56 रूपये (28.8 प्रतिशत), कृषि मजदूरी से प्राप्त आय 482791.84 रूपये (15.5 प्रतिशत), गैर कृषि से प्राप्त आय 1227323.84 रूपये (39.5 प्रतिशत) तथा व्यवसाय से प्राप्त आय 648347.36 रूपये (16.2 प्रतिशत) है जिसकी अपेक्षा दूरस्थ ग्राम में स्वयं की कृषि से प्राप्त आय 196198.24 रूपये (20.5 प्रतिशत), कृषि मजदूरी से प्राप्त आय 182990.08 रूपये (19.1 प्रतिशत), गैर कृषि से प्राप्त आय 435517.60 रूपये (45.4 प्रतिशत) तथा व्यवसाय से प्राप्त आय 143732.96 रूपये (15.0 प्रतिशत) है। इस प्रकार कुल निदर्श परिवारों की संख्या 384 है जिसके अंतर्गत कुल निदर्श परिवारों को स्वयं की कृषि से प्राप्त आय 1091440.8 रूपये (26.8 प्रतिशत), कृषि मजदूरी से प्राप्त आय 648347.36 रूपये (16.4 प्रतिशत), गैर कृषि से प्राप्त आय 1662841.44 रूपये (40.9 प्रतिशत) तथा व्यवसाय से प्राप्त आय 602599.68 रूपये (15.9 प्रतिशत) है। सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि कुल निदर्श परिवारों में प्रति परिवार आय 10594.82 रूपये मासिक है जिसमें निकटस्थ ग्राम के अंतर्गत प्रति परिवार आय 11433.72 रूपये मासिक एवं दूरस्थ ग्रामों में प्रति परिवार आय 8557.49 रूपये मासिक है। कुल निदर्श परिवारों में प्रति व्यक्ति आय 1786.74 रूपये मासिक है जिसमें निकटस्थ ग्रामों के अंतर्गत प्रति व्यक्ति आय 1937.68 रूपये मासिक एवं दूरस्थ ग्रामों में प्रति व्यक्ति आय 1426.25 रूपये मासिक है।

चित्र क्रमांक 1.1
निदर्श परिवारों में विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त कुल मासिक आय (रू.में)

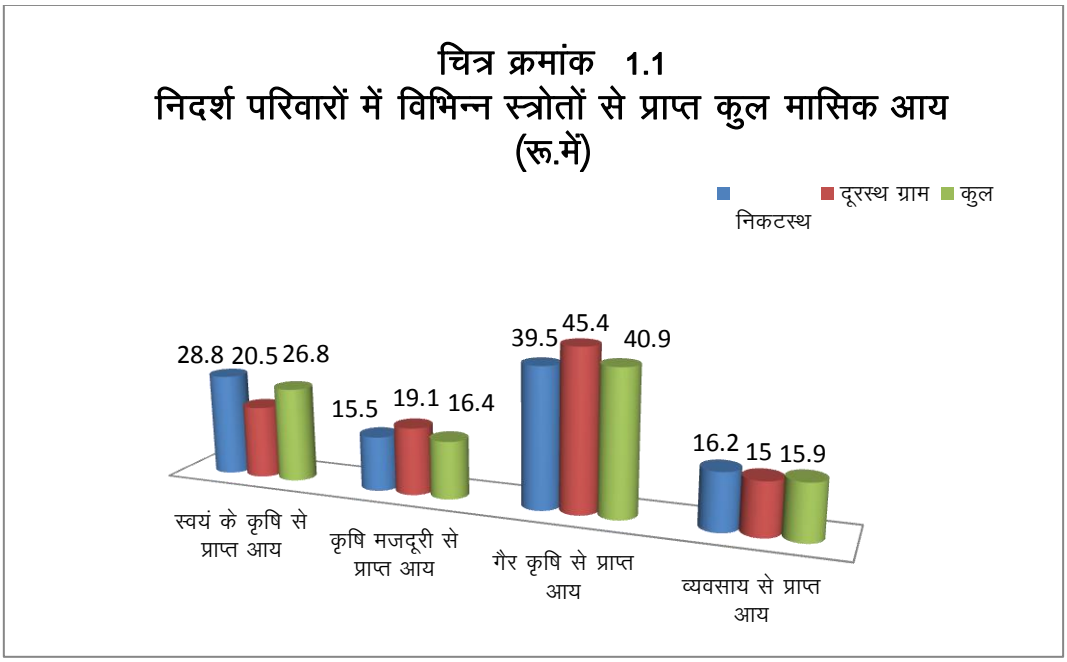

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी क्रमांक 1.2

दूरस्थ ग्राम में निदर्श परिवारों की प्रति व्यक्ति मासिक आय वर्ग समूह के आधार पर

प्रति व्यक्ति मासिक आय–वर्ग	परिवारों की संख्या	प्रतिशत	सदस्यों की संख्या	प्रतिशत	परिवारों का आकार
0–500	3	2.7	20	3.0	6.6
500–972	34	30.3	229	34.1	6.7
972–1000	3	2.7	19	2.8	6.3
1000–2000	43	38.34	275	40.9	6.4
2000–3000	19	17.0	92	13.7	4.8
3000–4000	7	6.2	26	3.9	3.7
4000–5000	2	1.8	7	1.0	3.5
5000 से अधिक	1	0.9	4	0.6	4.0
योग	112	100	672	100	6.0

स्त्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण।

सारणी क्रमांक 1.2 के अंतर्गत दूरस्थ ग्राम में निदर्श परिवार की प्रति व्यक्ति मासिक आय वर्ग के आधार पर परिवार की संख्या, सदस्यों की संख्या एवं परिवार का आकर के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 1000–2000 आय वर्ग में सर्वाधिक परिवारों की संख्या 43 (38.4 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 275 (40.9 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 6.4 है। 5000 से अधिक आय वर्ग के बीच सबसे कम परिवारों की संख्या 1 (0.9 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 4 (0.6 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 4.0 है। 0–500 आय वर्ग में परिवारों की संख्या 3 (2.7 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 20 (3. 0 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 6.6 है। 500–972 आय वर्ग में परिवारों की संख्या 34 (30.3 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 229 (34.1 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 6.7 है। 972–1000 आय वर्ग के बीच परिवारों की संख्या 3 (2.7 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 19 (2.8 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 6.3 है। सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि आय वर्ग 0–500 एवं 500–972 को मिला दिया जाए तो वह गरीब परिवारों को प्रदर्शित करता है, जो परिवार 972 रूपये प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय से कम व्यय करता है वह परिवार गरीबी रेखा से नीचें जीवन यापन करता है। इस प्रकार कुल निदर्श में गरीबी रेखा से नीचे परिवारों की संख्या 37 (33.03 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 249 (25.6 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 6.7 है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सारणी क्रमांक 1.3

निकटस्थ ग्राम में निदर्श परिवारों की प्रति व्यक्ति मासिक आय वर्ग समूह के आधार पर

प्रति व्यक्ति मासिक आय–वर्ग	परिवारों की संख्या	प्रतिशत	सदस्यों की संख्या	प्रतिशत	परिवारों का आकार
0–800	3	1.1	21	1.3	7.0
800–972	57	21.0	335	20.9	5.9
972–1000	1	0.3	8	0.5	8.0
1000–2000	98	36.0	702	43.7	7.2
2000–3000	71	26.1	369	23.0	5.2
3000–4000	31	11.4	130	8.1	4.2
4000–5000	7	2.6	29	1.8	4.1
5000 से अधिक	4	1.5	11	0.7	2.7
कुल	272	100	1605	100	5.9

स्त्रोत– व्यक्तिगत सर्वेक्षण।

सारणी क्रमांक 1.3 के अंतर्गत निकटस्थ ग्राम में निदर्श परिवार की प्रति व्यक्ति मासिक आय वर्ग के आधार पर परिवारों की संख्या, सदस्यों की संख्या एवं परिवार का आकार के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि 1000–2000 आय वर्ग में सर्वाधिक परिवारों की संख्या 98 (36.0 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 702 (43.7 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 7.2 है। 972–1000 आय वर्ग में सबसे कम परिवारों की संख्या 1 (0.3 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 8 (0.5 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 8.0 है। 0–800 आय वर्ग के बीच परिवारों की संख्या 3 (1.1 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 21 (1.3 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 7.0 है। 800–972 आय वर्ग में परिवारों की संख्या 57 (21.0 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 335 (20.9 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 5.9 है। सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कि आय वर्ग 0–800 एवं 800–972 को मिला दिया जाए तो वह गरीब परिवारों को प्रदर्शित करता है, जो परिवार 972 रूपये प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय से कम व्यय करता है वह परिवार गरीबी रेखा से नीचे माना जाता है। इस प्रकार कुल निदर्श में गरीबी रेखा से नीचे परिवारों की संख्या 60 (22.1 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 356 (22.2 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 5.9 है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष

1. कुल निदर्श परिवारों को स्वयं की कृषि से प्राप्त आय कुल 1091440.8 रूपये मासिक है जिसमें निकटस्थ ग्रामों को कुल 895242.56 रूपये मासिक एवं दूरस्थ ग्रामों को कुल 196198.24 रूपये मासिक आय की प्राप्ति होती है। निकटस्थ ग्रामों को दूरस्थ ग्रामों की अपेक्षा स्वयं की कृषि से प्राप्त आय अधिक होती है क्योंकि निकटस्थ ग्रामों में कृषि भूमि अधिक सिंचित है।
2. कुल निदर्श परिवारों को कृषि मजदूरी से प्राप्त आय कुल 665781.92 रूपये मासिक है जिसमें निकटस्थ ग्रामों को कुल 482791.84 रूपये मासिक एवं दूरस्थ ग्रामों को कुल 182990.08 रूपये मासिक आय की प्राप्ति होती है। निकटस्थ ग्रामों में कृषि मजदूरी से प्राप्त मासिक आय दूरस्थ ग्रामों की अपेक्षा अधिक है क्योंकि निकटस्थ ग्रामों में कृषि मजदूरों की कार्यशील संख्या दूरस्थ ग्रामों की अपेक्षा अधिक है।
3. कुल निदर्श परिवारों को गैर कृषि से प्राप्त आय कुल 1662841.44 रूपये मासिक है जिसमें निकटस्थ ग्रामों को कुल 1227323.84 रूपये मासिक एवं दूरस्थ ग्रामों को कुल 435517.60 रूपये मासिक आय की प्राप्ति होती है। निकटस्थ ग्रामों में गैर कृषि से प्राप्त मासिक आय दूरस्थ ग्रामों की अपेक्षा अधिक है क्योंकि निकटस्थ ग्राम शहर के समीप है जहां आस–पास बहुत से उद्योग स्थित है जिसके कारण निकटस्थ ग्रामों में लोगों को दूरस्थ ग्रामों की अपेक्षा कृषि कार्य के बाद आसानी से रोजगार उपलब्ध हो जाती है।
4. कुल निदर्श परिवारों को व्यवसाय से प्राप्त आय कुल 648347.36 रूपये मासिक है जिसमें निकटस्थ ग्रामों को कुल 504614.40 रूपये मासिक एवं दूरस्थ ग्रामों को कुल 143732.96 रूपये मासिक आय की प्राप्ति होती है। निकटस्थ ग्रामों में व्यवसाय से प्राप्त आय मासिक आय दूरस्थ ग्रामों की अपेक्षा अधिक है क्योंकि निकटस्थ ग्रामों में लोगों के पास किराना एवं फैंसी दुकान एवं अन्य व्यवसाय दूरस्थ ग्राम की अपेक्षा अधिक है।
5. निदर्श कुल 384 परिवारों को विभिन्न स्त्रोतों से कुल 4068411.52 रूपये मासिक है जिसमें निकटस्थ ग्रामों को कुल 3109972.64 रूपये मासिक एवं दूरस्थ ग्रामों को कुल 958438.88 रूपये मासिक आय की प्राप्ति होती है। इस प्रकार निकटस्थ ग्रामों में विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त मासिक आय दूरस्थ ग्रामों की अपेक्षा अधिक है।
6. दूरस्थ ग्रामों में आय वर्ग 0–500 एवं 500–972 को मिला दिया जाए तो वह गरीब परिवारों को प्रदर्शित करता है, जो परिवार 972 रूपये प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय से कम व्यय करता है वह परिवार गरीबी रेखा से नीचें जीवन यापन करते हैं। इस प्रकार कुल निदर्श में गरीबी रेखा से नीचे परिवारों की संख्या 37 (33.03 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 249 (25.6 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 6.7 है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

7. निकटस्थ ग्रामों में आय वर्ग 0–800 एवं 800–972 को मिला दिया जाए तो वह गरीब परिवारों को प्रदर्शित करता है, जो परिवार 972 रूपये प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय से कम व्यय करता है वह परिवार गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करते हैं। इस प्रकार कुल निदर्श में गरीबी रेखा से नीचे परिवारों की संख्या 60 (22.1 प्रतिशत), सदस्यों की संख्या 356 (22.2 प्रतिशत) तथा परिवार का आकार 5.9 है।

सुझाव –

1. **द्विफसलीय उत्पादन को बढ़ावा –** ग्रामीण क्षेत्रों में द्विफसलीय उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सिंचाई का उत्तम व्यवस्था करना चाहिए क्योंकि दूरस्थ ग्रामों में विशेषकर सिंचाई की व्यवस्था नहीं है इसलिए द्विफसलीय कृषि कार्य के लिए नहर, बांध, कुंआ एवं तालाब की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि सिंचाई के लिए पानी आसानी से मिल सके।
2. **उचित मजदूरी मूल्य –** जो ग्राम शहर के निकटस्थ होती है वहाँ मजदूरी की दर दूरस्थ ग्रामों की अपेक्षा अधिक होती है इस कारण दोनों जगहों की मजदूरी दरों मे बहुत अधिक असमानता होती है इसलिए श्रमिकों को उसके कार्य के आधार पर उचित मजदूरी प्राप्त होनी चाहिए।
3. **कृषि के आधुनिक तकनीक की व्यवस्था –** ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले अधिकांश कृषक परिवार अशिक्षित होते हैं जिसके कारण उन्हें आधुनिक कृषि यंत्रों की जानकारी नहीं हो पाती है और कृषि कार्य के लिए पुरानी तकनीक एवं पुराने बीजों का उपयोग करते हैं। जिनसे उत्पादन एवं उत्पादकता कम होती है इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक कृषि यंत्रों की जानकारी एवं सुविधा उपलब्ध करायी जानी चाहिए।
4. **समूह बनाकर कृषि कार्य –** ग्रामीण क्षेत्रों मे मुख्यतः सीमांत व लघु कृषक होते हैं। इन कृषक परिवारों को समूह बनाकर कृषि कार्य करना चाहिए जिससे की उसे मजदूरी के लिए दुसरे के खेतों मे जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी और न ही बाहर से दूसरे श्रमिकों की जरूरत पड़ेगी तथा सिंचाई के साधन व्यवस्था करके द्विफसलीय कृषि कार्य कर सकते हैं और उन्हें आसानी से रोजगार की भी प्राप्ति हो जाएगी। इसके लिए सरकार को विशेष योजना बनाकर उन्हें प्रेरित कर वित्तीय सहायता भी उपलब्ध कराना चाहिए।
5. **कौशल उन्नयन कार्यक्रम –** ग्रामीण युवकों एवं महिलाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण दिया जाए जिससे विशेष कर लघु एवं कुटीर उद्योगों एवं स्वसहायता समूह को प्रोत्साहन मिलेगा जो विभिन्न व्यवसाय खोलने के लिए प्रेरित होंगे और उसे असानी से स्व–रोजगार उपलब्ध हो जायेगा। इनसे उनकी आर्थिक स्थिति एवं जीवन स्तर में सुधार होगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. कुमार विरेन्द्र (2014): ''कृषि विकास एवं नई तकनीक'' सहयोग दर्शन, सितम्बर 2014, पृष्ठ क्रं –3–7.
2. गजपाल, नेमा (2003): '' छ.ग. के भूमिहीन श्रमिकों तथा लघु व सीमांत कृषकों में पलायन की समस्या'' शोध उपक्रम 2013 वर्ष 9 अंक 26, पृष्ठ क्रं –10–13.
3. तिवारी, नारायण प्रताप जे.पी. एवं एल.एन. हर्ष (2004) :''पारम्पारिक व उन्नत कृषि वानिकी'' खेती मासिक पत्रिका, जुन 2004, पृष्ठ क्रं –24.
4. Das, mohan thoumas(1997)- "Economics analysis of rice production in Cultivation areas of Kerala" Agricultrual Situation in India Dec 1997, Vol. IV No. 9 P. No. – 555.
5. Gosh Madhusudhan (2012), "Micro Finance and poverty in India : SHG-Bank Linkage Programme", Jounral of Rural Devlopment, Vol.31,No.3, July- September, pp.347-363.
6. Danziger, S., R. Haveman and R. Plotnick. (1981), "How Income Transfer Programs Affect Work, Savings, and the Income Distribution: A Critical Review." Journal of Economic Literature 19 (September): 975-1028.